जहाँ पकेगी आत्मा की भी फसल

बाबा आम्टे अपनी पत्नी साधना ताई के साथ

अंतरिक्ष के आकर्षण के प्रेरित
ऊँची उड़ानों के असंख्य प्रयोगों के बावजूद -
मैं खूब जानता हूँ
कि यह देह धरती के गुरुत्वाकर्षण से ही
गिरती है लड़खड़ा कर।
मस्तक ऊँचा रखने के लिए
जरूरी है पेट का भरा रहना
और आकाश की रहस्यों-भरी पहेली
सुलझाने से पहले
रोटी का 'यक्ष प्रश्न' हल करना
अनिवार्य है।
आज जिंदगी बेजान और रस हीन होकर
संशय में भटक रही है-
उसकी शक्ल बदलना
तकाजा है वक्त का
जिंदगी का चेहरा चिंताओं के काजल
से पुता हुआ है
उसे चाहिए उम्मीद के जुगनुओं की
सौगात
परिस्थितियों की मांग है यह।
किसी ने कहा भी है-
'चिता जलने के बाद भी
सुलगते रहेंगे सीने के ताजे जख्म'
ये ताजे जख्म ही सुलग-सुलग कर बनेंगे दावानल
जिसकी लपटों को बुझा नहीं सकेगा
कोई 'अग्नि-शामक'
और दुनिया को भस्म करके ही बुझेगी
यह आग।
गलित पंखों को सिखाना है उड़ने का
हौसला-
ऐसे गिद्धों की उड़ाने कितनी ऊँची
और भव्य हैं -
जिनकी जिंदगी सड़े-गले अंग खाने
में ही गुजर जाती है
उनकी तुलना में
इन कोमल, रंग-बिरंगी तितलियों का
साहस
निश्चय ही छोटा है।
फेंके, सड़े-गले अन्न कण खा कर
'समाज-पुरुष' के विराट शरीर को स्वच्छ रखने वाले
निपट गरीबी में जीने वाले ये शोषित पीड़ित
यदि हम इनके गलित पंखों में भर सकें
ऊँचे उड़ने का संकल्प
तो उनकी उड़ान गिद्धों से भी ऊँची
होगी नि:संशय।
वैभवशाली मखमली जीवन पर संभव नहीं है कोई प्रयोग- जब दु:ख
के आघातों से
कठोर रक्षा-कवच तोड़ दिये जाते हैं-
तभी मुक्त होती है जीवन की केन्द्रीय प्रेरणा।
महान् संकल्पों को आग की लपटों में-से करनी पड़ती है यात्रा।
सूली पर चढ़ने के लिए सीना आगे किये बगैर
मुकुट पहनने के लिए मस्तक आगे
करना संभव नहीं।
एक ऐसा भी जमाना था-
जब लक्ष्य सामने था मगर रास्ते पर
था घना अंधकार;
तब भी निराश नहीं हुआ मैं क्योंकि मेरी आस्था कह रही थी कि जहाँ
उनकी उंगलियाँ करती हैं संकेत
वहां रास्ता भी बना लेंगे उनके हाथ-
तुझे स्वीकार करना चाहिए।
मन में छिपे-ऋतु-परिर्वतन के चक्र को
ठीक उसी तरह
जैसे अपने खेतों पर मौसमों के बदलते तेवरों का करता है
स्वागत-
तूफानों के खिलाफ
वो तेरा पक्ष भले न ले
मगर आंधी-तूफानों में तुझे संरक्षण
जरूर देगा।
इसीलिए मैं विश्वास करता हूँ
उसकी कार्य-पद्धति पर।
और चलता हूँ
उसी की घड़ी के मुताबिक।

सुखे हुए जख्मों में मुँह खोलने की झंझट में
मुझे नहीं उलझना-
और कण-कण में सपने बोते हुए
मुझे नहीं गुजारनी रात निरर्थक।
दिल के पुराने घावों को
याददाश्तों के गिद्ध खाते रहें -
इससे फायदा ही क्या है?
जीना चाहिए वर्तमान में, उसके यथार्थ में।
सिर्फ जीवित रहना
तो एक भूतकालिक क्रिया है
जबकि जिंदगी 'आज' की नियामत है
और जानता हूँ मैं
दु:ख के प्याले से सच्चाई के घूँट पीते हुए
हिम्मत वालों के होंठ भी कांपते हैं
लेकिन यह भी तय है;
-कि आत्मीय स्नेह-भरी जिंदगी
पाने के लिए
छोड़ना पड़ेगा जीवन का मोह।
इसीलिए मेरे नौजवान साथियों-
इस युग-यात्रा में मेरे साथ चलने के लिए
अनिवार्य आमंत्रण दे रहा हूँ मैं।
युद्ध में लड़ने वाले जवानों की भरती के लिए नहीं-
बल्कि एक विराट अभाव की पूर्ति के लिए;
साथ ही, मेरे -तुम्हारे अस्तित्व को अर्थ
देने के लिए-
यहाँ आने की सख्त हिदायत दे रहा हूँ मैं।
जहाँ तुम्हारे जन्म से पहले ही
तुम्हारी जरूरतें महसूस की जा सकेंगी-
जहाँ तुम अपने व्यक्तित्व को लेकर
सीधे तन कर खड़े रह सकोगे-
और भीतर से फौलाद की तरह मजबूत
जवानों की अपराजय फौज तैयार हो सकेगी।
यहाँ मैं तुम्हें दिखाऊंगा-
कि तुम स्वयं अपने -आप में कितने बड़े हो
संभावनाओं से भरे-पूरे
जहाँ तुम हाथ-से-हाथ मिला कर खड़े हो सकोगे
एक मन-एक प्राण
जहां तुम्हारी प्रज्ञाएं एकत्र होंगी
और सपनों से जगमगाती लपटें तुमसे
करेंगी अंतरंग-वार्ता
अतिथि बनकर आने वाली प्रत्येक
खुशनुमा किरण
तुम्हारे घर की सदस्या होगी।
वहाँ 'आज' के आसपास
आस्था की क्यारी होगी
और उसमें लहरायेगी
प्रिय कर्मों की असीम हरियाली।
जहाँ संरक्षण के बहाने
दहशत के सींकचों के पीछे से
आने वाले 'कल' की तरफ देखने की
बंदिश
नहीं होगी तुम पर।
जहाँ भविष्य का फूल
वर्तमान की कलियों के रूप में
विकसित होगा
जहाँ दूसरों की खुशियाँ ही
बनेंगी तुम्हारे जख्मों का मरहम।
जो शोषण के दल पर कमाई करता है।
जोड़ता है समृद्धि-
वह शाश्वत अंधकार सौंपता है
समाज को।
लेकिन तुम
श्रम से ही बनोगे समृद्ध;
और जाने सकोगे
कि जीवन से हमारा रिश्ता
फूलों और मधुमक्खियों के रिश्ते- जैसा है
(वो खून का और नफरत का नाता नहीं)
फूल कृतार्थ है मधुरस लुटा कर
और मधुमक्खियों खुश हैं यह सौगात पा कर,
इसी परस्परता में मधुमक्खी की सार्थकता है
और फूलों का सहज विकास भी।
मेहनत के सार्थक पसीने से लथपथ
जब तुम निकलोगे शान से-
तब तुम्हारे माथे, वक्ष और हाथों का चुम्बन लेते हुए
मैं तुम्हें दूँगा यह दीक्षा-मंत्र:
'जूझते रहो समस्याओं से
पराजित न होना कभी,
क्योंकि तुम अपने संघर्षों में ही अपनी पूर्णता को भी पा रहे हो।

– बाबा आम्टे

(अनौपचारिका, मार्च 2008 से साभार)